चौधरी PHOTOSTAT

"I don't love studying. I hate studying. I like learning. Learning is beautiful."

"An investment in knowledge pays the best interest."

Hi, My Name is

दर्शन शास्त्र

UGC NET

पाश्चात्य दर्शन

कालक्रमानुसार विकास (chronological development)

1) ग्रीक काल < Plato / Aristotle (600 B.C. – 400 A.D.)

II) मध्यकाल (400 A.D. — 1500 A.D.)

III) आधुनिक काल (1500 A.D. — 1900 A.D.) → डेकार्ट to Heagel

IV) समकालीन (1900 A.D. —) → 6 – 11 topic

1) **ग्रीक काल** : पाश्चात्य दर्शन की शुरुआत ग्रीक दर्शन से होती है। प्रथम ग्रीक दार्शनिक थेलिज था जिसके अनुसार 'जल' ही परमतत्व है।

ग्रीक दर्शन में प्लेटो के दर्शन में पहली बार दर्शन सुव्यवस्थित रूप में दिखायी देता है।

ग्रीक दर्शन में सुकरात, प्लेटो, अरस्तु का काल स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है।

II) **मध्य काल** : धर्म गुरु व धर्म ग्रन्थ सत्यता के मानदण्ड थे। मध्य युग को अन्धकार युग (Dark age) कहा जाता है यहां वैचारिक स्वतन्त्रता का अभाव था। कैथोलिक चर्च की प्रधानता थी। जीवन का प्रत्येक पक्ष चर्च के अनुसार अनुशासित होता है। पोप को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था।

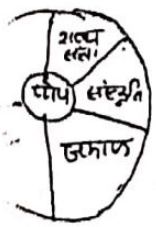

कैथोलिक → GOD
↓
चर्च
↓
पोप
↓
दुरुपयोग

धरती < A / I] Freedom and feel → अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की स्वतन्त्रता
↓
दुरुपयोग
↓
पाप
↓
संतानों में प्रविष्ट
↓
जन्म से पापी

पाप से मुक्ति ← जन्म से पापी
↑
कृपा

iii) आधुनिक दर्शन :
⇒ मार्टिन लूथर किंग के नेतृत्व धर्म सुधार आन्दोलन

धर्म राजसत्ता

विज्ञान की खोज - कारीबलि
↓ ↓
कापरनिकस Geocentric
Heliocentric

धर्मनिरपेक्षता < भारत → सभी धर्मों का समान संरक्षण
पाश्चात्य → राज्य, धर्म के प्रति उदास
↓
पृष्ठभूमि द्वारा प्रभावित

→ स्वतन्त्र चिंतन
→ विज्ञान का प्रभाव
→ धर्मगुरु एवं धर्म ग्रन्थ की बजाय अनुभव व बुद्धि के आधार पर सत्य का निरूपण
→ आस्था व विश्वास के बजाय संशय द्वारा ज्ञान प्राप्ति का प्रयास
→ आधुनिक दर्शन के अन्तर्गत हमें डेकार्ट से लेकर हीगल तक का अध्ययन करना है

iv) समकालीन पाश्चात्य दर्शन : 19 शताब्दी के बाद का दर्शन
मूर एवं रसेल से लेकर हूसर्ल तक अध्ययन करना है

Scanned by CamScanner

पुनः स्पर्श, रंग आदि की व्याख्या हेतु भी विस्तार का होना आवश्यक है। अर्थात दोनो सहअस्तित्ववान हैं

(ii): जिस प्रकार गौण गुण इन्द्रियो के द्वारा जाने जाते हैं- उसी प्रकार प्राथमिक गुण भी इन्द्रियगम्य हैं जैसे रंग का ज्ञान आखो के बिना सम्भव नही है, स्वाद का ज्ञान जिह्वा के बिना सम्भव नही है उसी प्रकार ठोसपन का ज्ञान त्वचिक स्पर्श आदि के बिना सम्भव नही है स्पष्ट है कि दोनो अनुभव आधारित है वास्तव मे हमारे मन मे प्राथमिक गुणो के वैसे ही प्रत्यय बनते हैं जैसे कि गौण गुणो के बनते हैं।

(iii): बर्कले के अनुसार गौण गुणो की भाति प्राथमिक गुण भी गतिशील हैं। एक ही जहाज नजदीक से देखने पर बड़ा दिखायी देता है और दूर से देखने पर वही जहाज छोटा दिखायी देता है इससे स्पष्ट है कि आकृति, विस्तार आदि भी ज्ञाता सापेक्ष है। वस्तुतः प्राथमिक व गौण गुण दोनो मानसिक, स्वजातीय एवं आत्मनिष्ठ हैं। अतः बर्कले के अनुसार सारे गुणो को गौण गुण ही कहना चाहिए प्रकृति ज्ञाता से पृथक एवं स्वतन्त्र इन गुणो की सत्ता

नहीं है अतः प्राथमिक गुणों के आधार के रूप में वस्तु की सत्ता को मानने का कोई औचित्य नहीं है यहां बर्कले यह कहते हैं कि पहले हम भूल उठाते हैं और बाद में यह कहते हैं कि हमें कुछ दिखाई नहीं देता।

(5) प्रत्यक्ष नहीं : बर्कले के अनुसार वस्तु की स्वतन्त्र सत्ता को हमें कभी प्रत्यक्ष नहीं होता अतः उसकी सत्ता को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

7) अनुमान से भी नहीं : अनुमान से भी बाह्य वस्तु की सत्ता का ज्ञान नहीं किया जा सकता। अनुमान के लिए भी सर्वप्रथम प्रत्यक्ष का होना आवश्यक है। प्रत्यक्ष से केवल प्रत्यय मिलते हैं। ये प्रत्यय मानसिक हैं अतः इन मानसिक प्रत्ययों के आधार पर बाह्य भौतिक वस्तु की सत्ता को अनुमानित नहीं किया जा सकता।

(6) कारण-कार्य सम्बन्ध : लॉक ने जड़द्रव्यों को प्राथमिक गुणों का कारण माना था। इस प्रकार वे कारणता सिद्धान्त के आधार पर भौतिक पदार्थ की सत्ता को स्वीकार करते हैं। - बर्कले के अनुसार भौतिक पदार्थ

Scanned by CamScanner

प्रत्ययों का कारण नहीं हो सकते क्योंकि भौतिक पदार्थ निष्क्रिय व जड़ है कोई सक्रिय सत्ता ही प्रत्ययों का कारण हो सकती है जो कि चेतन हो। यहां चेतनतत्व के रूप में आत्मा एवं ईश्वर की स्थिति को स्वीकार किया गया है। बर्कले के अनुसार ईश्वर ही प्रत्ययों का मूलकारण एवं आधार है।

(2) अनवस्था दोष: यदि प्रत्ययों के कारण के रूप में जड़ द्रव्य की सत्ता को अनुमानित किया गया तो फिर उस बाह्य भौतिक पदार्थ के रूप में किसी अन्य की सत्ता को अनुमानित करना होगा और इस प्रकार यहां अनवस्था दोष की उत्पत्ति हो जाती है।

(2) अमूर्त प्रत्ययों का खण्डन : भौतिकतावाद का खण्डन एवं अध्यात्मवाद की स्थापना हेतु

बर्कले लाक द्वारा समर्थित अमूर्त प्रत्ययों की अवधारणा का खण्डन करते हैं उल्लेखनीय है कि लाक ने अमूर्त प्रत्ययों को मानकर जड़द्रव्य की सत्ता को स्वीकार किया था। लाक यद्यपि जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन करते हैं परन्तु वे अमूर्त प्रत्ययों की सत्ता को स्वीकार करते हैं उनके

Scanned by CamScanner

अनुसार अमूर्त्त प्रत्ययों का मानव चिंतन में महत्वपूर्ण स्थान है इसी कारण मनुष्य पशु से श्रेष्ठ प्राणी के रूप में स्थापित होता है।

क्या है? किसी भी सामान्य या जाति के विचार को जो सम्पूर्ण वर्ग विशेष का सार है उसे अमूर्त प्रत्यय कहते हैं। जैसे → मनुष्यत्व, गोत्व आदि। पद्म लाक का यह कहना है कि अनुभव के माध्यम से हमें गुण प्राप्त होते हैं परन्तु इन गुणों के आश्रय के रूप में जड़द्रव्य को मानना आवश्यक है। इस प्रकार जड़द्रव्यों की स्थिति एक प्रकार से अमूर्त्त प्रत्ययों की स्वीकृति का परिणाम है।

बर्कले के अनुसार अमूर्त प्रत्यय असम्भव है हमारे मन में कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो विशेषों को ग्रहण कर सामान्य का निर्माण करे। बर्कले के अनुसार सभी प्रत्यय विशेष एवं मूर्त ही होते हैं हमें अनुभव से विशेषों का ही ज्ञान प्राप्त होता है जैसे हम जब भी किसी मनुष्य की कल्पना करेंगे तो फिर उसमें कुछ न कुछ विशेषता अवश्य पायेंगे।

Scanned by CamScanner

Philosophy of Religion

धर्म — धर्मशास्त्र — धर्मदर्शन — दर्शन

धर्म ↓

(i) मूलतः आस्था व विश्वास पर आधारित
(ii) पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण
(iii) निर्धारित करना उद्देश्य
(iv) प्रत्येक धर्म अपने तक सीमित।
(v) हमलोग और वे लोग की बात।

धर्मदर्शन ↓

धर्म का अंग न होकर दर्शन का अंग है।

दर्शन ↓

परम्परागत रूप से दर्शन को परिभाषित करते हुए ऐसा कहा जा सकता है कि दर्शन जीवन एवं जगत के प्रारम्भ एवं अन्त को जानने का — निष्पक्ष
तार्किक
समीक्षात्मक
बौद्धिक
मूल्यात्मक
प्रयास है।

जीवन →
- सामाजिक
- राजनीतिक
- आर्थिक
- धार्मिक पक्ष : धार्मिक जीवन के विभिन्न पक्षों का दार्शनिक अध्ययन धर्मदर्शन है।

Philosophical attitude : निष्पक्ष, बौद्धिक, रचनात्मक, समीक्षात्मक मूल्यात्मक।

* धर्म दर्शन न तो धर्म है न ही दर्शन है।

⇒ दर्शन की विषय वस्तु व्यापक → धर्मदर्शन सीमित।

Scanned by CamScanner

* धर्म के विभिन्न पक्ष :

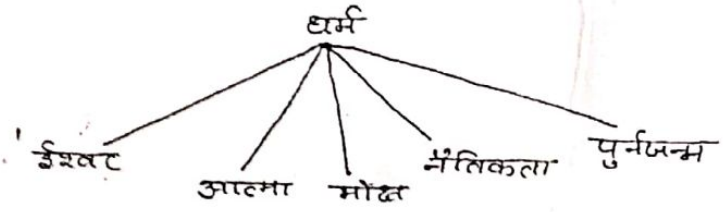

⇒ धर्मदर्शन का दृष्टिकोण अधार्मिक दृष्टिकोण नही है। यह एक तटस्थ दृष्टिकोण है।

↳ अन्ततः महत्व < पक्ष / विपक्ष → दोनों का मूल्यांकन

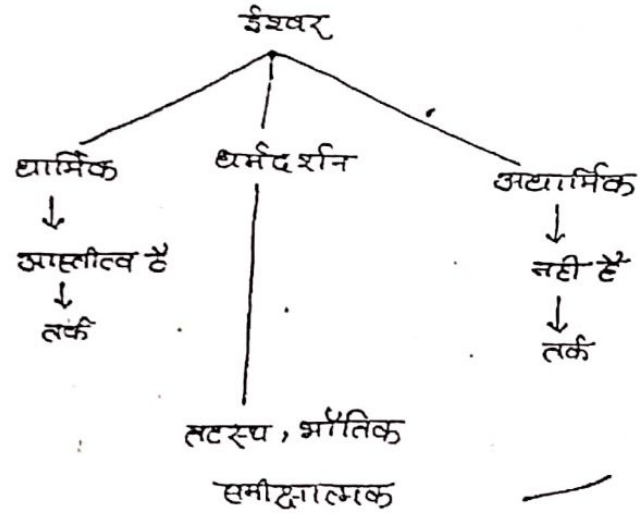

ईश्वर :

सापेक्ष : देश-काल, परिस्थिति पर निर्भरता

निरपेक्ष : देश-काल, परिस्थिति पर निर्भरता नही

ससीमित : परिमित (finite) : स्थान व काल से आबद्ध

असीमित (अपरिमित) : स्थान व काल में आबद्धता नही।

Scanned by CamScanner

अनन्त : न अन्त → समय की परिसीमा से परे

शान्त : समय की सत्ता से आबद्ध।

सत् : तत्त्व के सन्दर्भ → Real entities

सत्ता : ज्ञानमीमांसीय सन्दर्भ → विचार आदि अभौतिक सत्ताओं के सन्दर्भ में

लौकिक : प्राकृतिक : जो इन्द्रियों की परिसीमा में आबद्ध किया जा सके।

अलौकिक : पारलौकिक : इन्द्रियों की परिसीमा से परे।
↳ दिव्य, अनुभवातीत सत्ता → ईश्वर

निमित्त कारण : निमित्त कारण वह है जो उपादान कारण में गति एवं व्यवस्था उत्पन्न कर कार्य को निर्मित करता है। घट के निर्माण के क्रम में कुम्हार निमित्त कारण है। निमित्त कारण 'कार्य' से बाहर रहता है।

उपादान कारण : उपादान कारण वह सामग्री है जिससे कार्य का निर्माण किया जाता है। जैसे घट के निर्माण के क्रम में मिट्टी उपादान कारण है। उपादान कारण कार्य में विद्यमान हो जाता है।

कारणता सिद्धान्त : प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है।

Transcendent ⟷ Immanent
अतीन्द्रिय ⟷ अन्तर्वर्ती

ईश्वर
- → निमित्त : विश्वातीत → [struck-through] अनुभवातीत
- → उपादान : विश्वव्यापी → अन्तर्वर्ती
- → निमित्त व उपादान : विश्वातीत व विश्वव्यापी दोनों → मकड़ी के जाले की स्थिति
  → अनुभवातीत व अन्तर्वर्ती दोनों।

विश्वव्यापी : पाप-पुण्य की अवधारणा पर चोट
ईश्वर विनाशी व विकारी
स्वरूप की समस्या
उपासना का औचित्य पर प्रश्नचिह्न

विश्वातीत : उपासना के औचित्य पर प्रश्नचिह्न

[illegible]: एक या सम्प्रदाय : जगत को बनाया और बाहर हो गया
→ जब जगत में समस्या
→ ईश्वर का अवतार या पैगम्बर की उत्पत्ति।

प्रयोजनमूलक तर्क, टेलीलॉजिकल तर्क : किसी व्यवस्था ईश्वर के होने से

* धर्म दर्शन मे हमे ईसाई व हिंदू अवधारणा का प्रधानत: अध्ययन करना है.

व्यापक हिंसा : धर्म दर्शन व्यापक हो सकता है।

* धर्म दर्शन का क्षेत्र : सभी टापिक का अध्ययन.

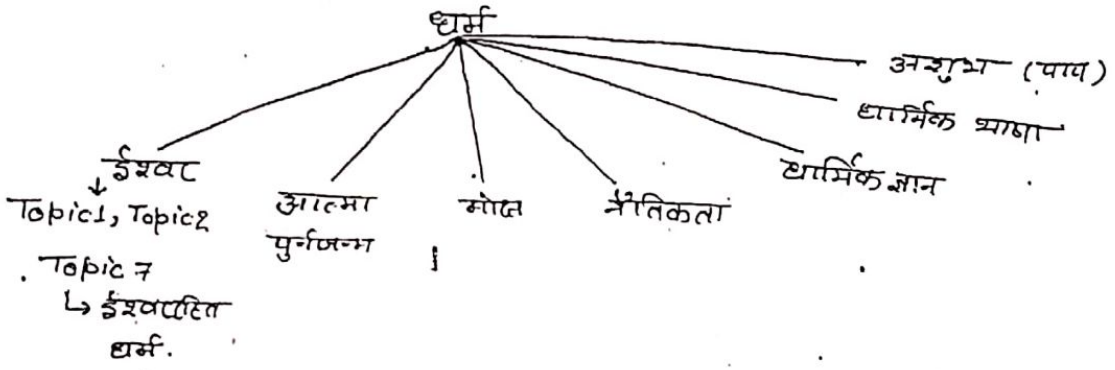

Topic:3

अशुभ : जो नैतिक दृष्टिकोण से नही होना चाहिए।

↳पाप

जगत की रचना → ईश्वर

जगत की समस्या → जानबूझकर → दयालु नही
असमर्थ → सर्वशक्तिमान नही

Topic 4

अमरता : नित्य, शाश्वत, अपरिवर्तनशील

अपरिवर्तनशील : पुन:-पुन: जन्म धारण करना।

जीवन से दुखो की समाप्ति → मोक्ष

कर्म नियम → अच्छा कर्म - अच्छा फल
बुरा कर्म - बुरा फल

Scanned by CamScanner

⇒ कर्मनियम, कारणता सिद्धान्त का नैतिक क्षेत्र में प्रयोग है।

कारणता सिद्धान्त : कारण व कार्य में कुछ समरूपता
(तिल से ही तेल)

अच्छा फल → अच्छे कर्म

कर्म नियम → आत्मा की अमरता
पुर्नजन्म
मोक्ष

वेदों के स्तर पर जीवन का परम लक्ष्य → स्वर्ग

दर्शन के स्तर पर जीवन का परम लक्ष्य → मोक्ष

नव्य वेदान्त के स्तर पर परम लक्ष्य → मानव कल्याण

⇒ Topic 5 :

धार्मिक ज्ञान
- गीता
- कुरान
- बाइबिल

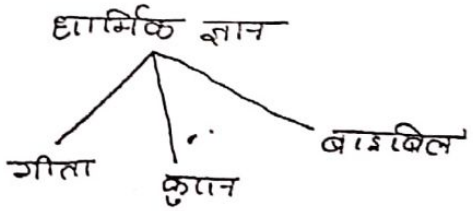

श्रुति : दैव प्रकाशना ⟷ Revelation (ईश्वरीय उद्घाटन)
(Shruti) अन्तर
- ग्रन्थों
- चमत्कार
- सन्यासी

⇒ Topic : 6

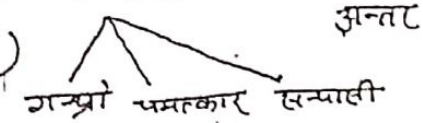

धार्मिक अनुभव ⟷ दैनिक अनुभव

↳ Internally contact → confidence

↳ साधारण अनुभूति

↳ धार्मिक अनुभूति की पराकाष्ठा

अवर्णनीय ← रहस्यात्मकानुभूति होती है

Scanned by CamScanner

Topic: 5: राजनैतिक विचारधाराएँ : अराजकतावाद, मार्क्सवाद एवं समाजवाद

पूँजीवाद	समाजवाद	मार्क्सवाद
→ साधनों के उपभोग की स्वतन्त्रता	→ समानता पर विशेष जोर	→ योग्यता के अनुसार काम; आवश्यकता के अनुसार मजदूरी

समाजवाद (socialism) : वह आर्थिक और राजनीतिक सिद्धान्त जिसके अनुसार समाज में उत्पादन, वितरण और विनिमय के प्रमुख साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व और नियंत्रण स्थापित होना चाहिए ताकि सरकार ऐसी नीतियां बना सके जिनसे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बल पर विकास का समुचित अवसर मिल सके।

साम्यवाद (communism) : इस विचारधारा के अनुसार एक ऐसी समाज-व्यवस्था का स्थापना होना चाहिए जिसमें निजी संपत्ति (Private Property) का कोई स्थान नहीं होगा, वर्ग भेद मिट जाएगा, और प्राय: सभी पुरानी संस्थाएं और मान्यताएं समाप्त होनी चाहिए। यह समाजवाद की उन्नत अवस्था को व्यक्त करता है।

मार्क्सवाद (marxism) : मार्क्सवाद वह सिद्धान्त है जिसके अन्तर्गत मानव-समाज की समस्याओं को इतिहास के माध्यम से समझने का प्रयत्न किया जाता है और इतिहास को परस्पर-विरोधी शक्तियों और वर्गों के संघर्षों की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। यह समाज को पूँजीपति वर्ग तथा मजदूर वर्ग दो भागों में बाँटता है तथा यह अपेक्षा करता है कि गरीबी से मुक्ति तथा ~~[illegible]~~ समानता की स्थापना के लिए मजदूर वर्ग को पूँजीपति वर्ग के विरुद्ध संगठित होना होगा।

अराजकतावाद (Anarchism) : वह सिद्धान्त जिसके अनुसार किसी भी प्रकार सरकार अनावश्यक या अवांछनीय है उसमें साधारण;

यह तर्क दिया जाता है कि मनुष्य मूलतः विवेकशील, निष्कपट और न्यायपरायण प्राणी है। अतः यदि समाज सही ढंग से संगठित हो तो किसी प्रकार के बल-प्रयोग की जरूरत नहीं होगी।

Topic: 6: मानववाद, धर्मनिरपेक्षतावाद, बहुसंस्कृतिवाद - आदर्श रूप।

⇒ ये तीनों सिद्धान्त JEL की स्थापना के लिए आवश्यक हैं परन्तु इसमें बहुसंस्कृतिवाद एक विवादित सिद्धान्त है।

multiculturism → विरोध
- दक्षिणपंथी → स्वसंस्कृति का उन्नयन।
- वामपंथी → आर्थिक असमानता पर विरोध बल
- नारीवादी → तर्क → हमें मुख्यतः लिंग समानता पर ध्यान देना चाहिए

Topic: 8: विकास एवं सामाजिक उन्नति।
↳ All round sustainable development
↳ प्रगति → प्रकृष्ट गति
× अधोगति

Topic: 9: लिंग भेद: इसका तात्पर्य जैविकीय भेद से न होकर बल्कि सामाजिक व सांस्कृतिक आधार पर स्त्रियों के साथ किए जाने वाले भेद से है।

Topic: 10: जाति भेद: गाँधी एवं अंबेडकर

गांधी	अंबेडकर
↓	↓
वर्ण व्यवस्था में विकृति के कारण जाति व्यवस्था	जाति भेद, वर्ण व्यवस्था की सामान्य परिणति है वर्ण व्यवस्था को ही हटाओ।

Scanned by CamScanner

राज० सिद्धान्त

- तथ्य → is
- मूल्य → ought to

राज० दर्शन

↓

मूल्यात्मक विवेचन

↓

क्या होना चाहिए

↓

अमूर्तता → concept

उदा० : लोकतन्त्र → संस्थाएं, प्रक्रियाएँ → तथ्य; दर्शन → मूल्य → राजनीतिक विज्ञान

लोकतन्त्र - लोकतन्त्र सर्वश्रेष्ठ प्रणाली है या नहीं? → राज० दर्शन

दर्शन → स्वतन्त्रता → मुक्ति (Liberty)

Imp Definition :

प्रमुख विचारधाराएं

उदारवाद

① नकारात्मक या शास्त्रीय या पारंपरागत या व्यक्तिवाद
लॉक, स्पेंसर, थॉमस पेन

② सकारात्मक उदारवाद या आधुनिक उदारवाद
ग्रीन, लास्की, बार्कर

③ नव-उदारवाद या स्वेच्छातंत्रवाद
नाजिक, हैयक, बर्लिन, मिल्टन फ्रीडमैन

④ समतावाद
जान रॉल्स

समाजवाद

① स्वप्नलोकीय समाजवाद (Utopian socialism)
सेंट साइमन, चार्ल्स फूरियर, राबर्ट ओवेन

(ii) वैज्ञानिक समाजवाद या मार्क्सवाद
↓
कार्ल मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, माओ.

(iii) लोकतांत्रिक समाजवाद या विकासवाद
एडवर्ड बर्नस्टीन.

आदर्शवाद

अराजकतावाद

(i) प्रोधों
(ii) बाकुनिन
(iii) क्रोपोटकिन
(iv) गांधी
(v) टॉल्सटाय

Scanned by CamScanner

उदारवाद :

(i) पूंजीवाद का समर्थन करता है।

(ii) निजी सम्पत्ति का समर्थन करता है।

(iii) व्यक्ति केन्द्रित दर्शन है। → व्यक्ति ही साध्य है।

(iv) इसका केन्द्रिय मूल्य स्वतन्त्रता है।

(v) यह संविधानवाद में विश्वास रखता है। → सीमित शासन

(vi) व्यक्ति को तार्किक प्राणी (विवेकशील प्राणी) मानता है। → समाज व राज्य व्यक्ति में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

नकारात्मक उदारवाद : (i) यह 'सीमित राज्य' या 'पुलिस राज्य' में विश्वास करता है। सीमित राज्य का अर्थ है ऐसा राज्य जो केवल विधि व्यवस्था बनाये रखने का काम करेंगे इसी को पुलिस राज्य भी कहते हैं।

राज्य — कानून ✓
व्यवस्था ✗

(ii) नकारात्मक उदारवाद अर्थव्यवस्था में राज्य के अहस्तक्षेप का समर्थन करते हैं अतः वे 'अहस्तक्षेप की नीति' के समर्थक हैं।

(iii) नकारात्मक उदारवाद 'अणुवादी व्यक्ति' (Atomised individual) का समर्थक है। इसका अर्थ है अणु की भांति व्यक्ति का स्वतन्त्र अस्तित्व है। वह राज्य या समाज पर निर्भर नहीं है।

(iv) नकारात्मक उदारवाद 'नकारात्मक स्वतन्त्रता' के विचार का समर्थक है। नकारात्मक स्वतन्त्रता का अर्थ है व्यक्ति के जीवन में बंधनों का आभाव होना।

Scanned by CamScanner

सकारात्मक उदारवाद : ① यह 'कल्याणकारी राज्य' का समर्थन करता है।

कल्याणकारी राज्य का अर्थ है ऐसा राज्य जो जनता के सभी वर्गों और विशेषकर पिछड़े वर्गों के उत्थान का कार्य करता है। कल्याणकारी राज्य शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि क्षेत्र में राज्य की सक्रिय भूमिका को स्वीकार करता है।

India → Police state
→ welfare state

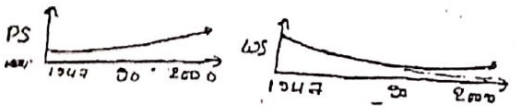

② सकारात्मक उदारवाद निजी सम्पत्ति को स्वीकार करते हुए अर्थव्यवस्था में राज्य के हस्तक्षेप का समर्थन करता है।

③ सकारात्मक उदारवाद भी व्यक्ति को समाज से अधिक महत्व देता है लेकिन यह व्यक्ति के हित व समाज के हित को परस्पर पूरक मानता है।

④ सकारात्मक उदारवाद 'सकारात्मक स्वतन्त्रता' का समर्थन करता है। सकारात्मक स्वतन्त्रता का अर्थ है व्यक्तित्व के विकास के अवसरों का होना। इसके लिए राज्य के कुछ बंधनों को स्वीकार किया जा सकता है।

⇒ स्वतन्त्रता के लिए बंधन आवश्यक है। यह बंधन का तार्किक होना आवश्यक है। जैसे → शिक्षा का अनिवार्य कानून।

⑤ सकारात्मक उदारवादी स्वतन्त्रता एवं समानता को परस्पर पूरक मानते हैं।

नव-उदारवाद : नवउदारवाद 21 वी शताब्दी में सकारात्मक उदारवादी विचारों का पुर्नजीवन है।

① यह स्वायत्त बाजार व्यवस्था में विश्वास रखता है।

② वे राज्य की सीमित भूमिका को मानते हैं।

③ नाजिक ने इस सम्बन्ध में 'रात्रिकालीन प्रहरी राज्य' का

Scanned by CamScanner

का विचार दिया है अर्थात राज्य केवल विधि व्यवस्था को बनाये रखने का कार्य करे। नाजिक ने 'सीमित लेकिन मजबूत राज्य' (minimal but strong state) का विचार भी दिया है।

(iv) नवउदारवाद स्वतन्त्रता व समानता को परस्पर विरोधी मानता है। वे केवल कानूनी समानता के समर्थक हैं। सामाजिक आर्थिक समानता के विरोधी हैं। अतः सामाजिक आर्थिक समानता स्थापित करने के विभिन्न उपाय जैसे वंचित वर्गों के लिए विशेष योजनाओं का वे विरोध करते हैं।

(v) नव उदारवादी भूमण्डलीकरण के समर्थक हैं।

समतावाद : (Egalitarianism)

(i) यह निजी सम्पत्ति और बाजार व्यवस्था में विश्वास रखता है लेकिन बाजार को नियन्त्रित करना चाहता है।

(ii) यह कल्याणकारी राज्य का समर्थन करता है।

(iii) समतावाद स्वतन्त्रता को महत्व देते हुए भी समानता लाने पर बल देता है।

⇒ समकालीन संघर्ष → नव उदारवाद ↔ समतावाद
राजनीतिक कारक प्रबल → सकारात्मक व सकारात्मक उदारवाद के संघर्ष में
आर्थिक कारक प्रबल → नवउदारवाद व समतावाद के संघर्ष में

Scanned by CamScanner

भारतीय दर्शन
↓
वेद

आस्तिक (Orthodox)
↓
वेदों की प्रमाणिकता स्वीकार्य
↓
षड्-दर्शन
↓
सांख्य – योग
न्याय – वैशेषिक
मीमांसा – वेदान्त
अरविन्द – नव्य वेदांती

नास्तिक (Heterodox)
↓
वेदों की प्रमाणिकता अस्वीकार्य
↓
1- चार्वाक → नास्तिक शिरोमणि
↓
वेदों के साथ ईश्वर & आत्मा का भी खण्डन
2- बौद्ध
3- जैन

भारतीय दर्शन
↓
ईश्वर

ईश्वरवादी
↓
ईश्वर की सत्ता स्वीकार्य
↓
न्याय, वैशेषिक, योग & वेदान्त
अरविन्द

अनीश्वरवादी
↓
ईश्वर की सत्ता अस्वीकार्य
↓
J, B, C, सांख्य एवं मीमांसा
↓
आस्तिक दर्शन पर अनीश्वरवादी

✓ **नव्य वेदांत** –
वेदांत की व्यावहारिक & युगानुकूल व्याख्या ही नव्य वेदांत है।

कर्म नियम / कर्मवाद –
कर्म नियम के अनुसार अच्छे कर्म का अच्छा फल & बुरे कर्म का बुरा फल अवश्य प्राप्त होता है।

कारणता सिद्धांत / कार्य-कारण –
इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है।

ज्ञान मीमांसा -

यह दर्शन शास्त्र की एक प्रमुख शाखा है जिसमें ज्ञान के साथ ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान की सीमा, ज्ञान की प्रमाणिकता, ज्ञाता-ज्ञेय संबंध इत्यादि की विवेचना की जाती है।

तत्व मीमांसा -

यह दर्शन की एक प्रमुख शाखा है जिसमें मूल तत्व की संख्या (एकतत्ववाद, द्वैतवाद, बहुतत्ववाद), मूल तत्व के स्वरूप (भौतिकवाद, मध्यात्मवाद, द्वैतवाद) आदि की विवेचना की जाती है, इसके अंतर्गत सत्ता, पदार्थ, द्रव्य, ईश्वर, आत्मा, जगत के मूल तत्व, प्रकृति-पुरुष इत्यादि की विवेचना की जाती है।

तत्व मीमांसा → प्रधान दर्शन → वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त।

ज्ञान मीमांसा → प्रधान दर्शन → न्याय, मीमांसा।

दोनो मीमांसा → प्रधान दर्शन → चार्वाक, जैन, बौद्ध।

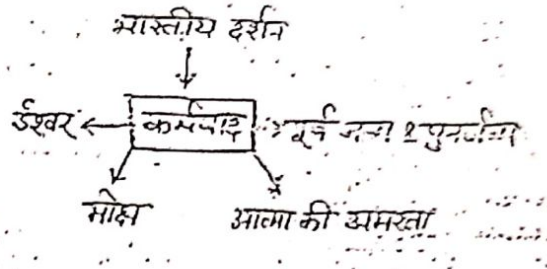

Scanned by CamScanner

9- भारतीय दर्शन यह मानता है कि जीवन एक रंग मंच की भाँति है जिस पर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रस्तुति देनी है।

10- भारतीय दर्शन जीवन से घनिष्ठता से संबंधित है। यहाँ प्रत्येक भारतीय दर्शन जीवन जीने की एक विशेष पद्धति बताता है जिसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जा सकता है & अंततः जीवन से दुःखो को दूर किया जा सकता है।

11- भारतीय दर्शन का विकास क्षैतिज रूप से/समानान्तर रूप से हुआ है, दूसरी ओर पाश्चात्य दर्शन का विकास लम्बवत हुआ है।

12- भारतीय दर्शन का विकास खंडन-मंडन प्रक्रिया के तहत हुआ है।

भारतीय दर्शन पर आक्षेप

1- निराशावादी

2- पलायनवादी

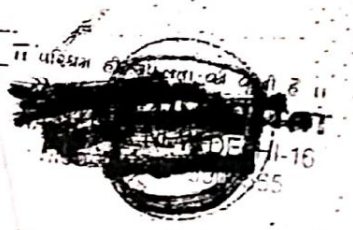

आरम्भ के दृष्टिकोण से या सीमित दृष्टिकोण से हम भारतीय दर्शन को निराशावादी कह सकते हैं, क्योंकि यह जीवन में दुःखो को देखता है, परन्तु अपनी पूर्णता / चरम परिणति में भारतीय दर्शन को निराशावादी कहना ठीक नहीं है। अपनी पूर्णता में यह आशावादी है क्योंकि प्रत्येक I.P. में दुःखो को दूर करने के उपाय बताये गये हैं। (4 आर्य सत्य code)

विभिन्न भारतीय दर्शनों में प्रायः इस लौकिक जीवन को कम महत्व दिया गया है, जगत में आसक्ति के परित्याग की बात कही गई है तथा इसी संदर्भ में भारतीय दर्शन के पलायनवादी होने का आरोप लगाया जाता है। परन्तु इसे पूर्णतः स्वीकार नहीं किया जा सकता, बोधिसत्व, स्थिर

प्रश्न 8. विभिन्न दर्शनों में वर्णित जीवन मुक्ति की अवधारणा इस जगत में

Scanned by CamScanner

भारतीय दर्शन की मूलभूत विशेषताएं -

1- कर्म नियम में विश्वास-

चार्वाक को छोड़ कर सभी भारतीय दर्शन कर्म नियम में विश्वास करते हैं। इसके अनुसार अच्छे कर्मों का अच्छा फल तथा बुरे कर्मों का बुरा फल कर्ता को अवश्य मिलता है।

2- विचारों की स्वतंत्रता-

विभिन्न भारतीय दर्शनों (I.P) का विकास बिना किसी दबाव के स्वतंत्र रूप से हुआ है। विभिन्न विरोधी विचार धाराओं की उपस्थिति इसकी पुष्टि करती है।

3- मोक्ष जीवन का चरम लक्ष्य-

चार्वाक दर्शन को छोड़कर समस्त I.P. मोक्ष को चरम आध्यात्मिक लक्ष्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

4- नित्य आत्मा में विश्वास-

चार्वाक & बौद्ध को छोड़कर समस्त भारतीय दर्शन आत्मा में विश्वास करते हैं।

5- दुःख का कारण अज्ञान / अविद्या है-

समस्त दर्शन द्वारा स्वीकार्य।

6- नैतिकता को महत्व-

समस्त I.P जीवन में नैतिकता के महत्व को प्रतिस्थापित करते हैं। अपवाद - निकृष्ट चार्वाक।

7- पूर्वजन्म & पुनर्जन्म में विश्वास-

अपवाद - चार्वाक

8- भारतीय दर्शन में दर्शन & धर्म में समन्वय दिखता है; जैसे जैन दर्शन भी है & धर्म भी है।

Scanned by CamScanner

रह कर ही औरों के जीवन को और अधिक आनंदपूर्ण बनाने की बात करता है। अतः इस पर पलायनवादी होने का आरोप पूर्णतः सत्य नहीं है।

* जीवन में मुक्ति → सदेह मुक्ति
* मृत्यु के बाद मुक्ति → विदेह मुक्ति
* स्थित प्रज्ञ → गीता → सुख दुःख से परे

चार्वाक दर्शन

चार्वाक शब्द का अर्थ- विभिन्न मत हैं-

1- चारु + वाक् = सुंदर वचन

2- चार्वाक नामक ऋषि द्वारा प्रतिपादित होने के कारण।

3- चार्वाक चर्व धातु से बना है जिसका अर्थ है - 'चबाना'। यह सभी आदर्श वादों / नैतिक मूल्यों को चबा जाता है।

4- बृहस्पति द्वारा स्थापित दर्शन। सुरासुर संग्राम में असुरों को कमजोर करने के लिए प्रतिपादित किया था।

पाठ्य क्रम-

(i) ज्ञान का सिद्धान्त या ज्ञान मीमांसा

(ii) अतीन्द्रिय सत्ताओं का निराकरण
↓
अनुभवातीत / प्रत्यक्षातीत / इन्द्रियातीत (Transcendent)
वस्तु

⇒ प्रमा → प्रमाण → प्रमेय → प्रमाता
↓ ↓ ↓ ↓
यथार्थ अनुभव — माध्यम — ज्ञेय / ध्येय — ज्ञाता
↓
यथा + अर्थ ⇒ के अनुसार + वस्तु ⇒ वस्तु के अनुसार अनुभव → जैसी वस्तु वैसा अनुभव

⇒ अप्रमा → अयथार्थ अनुभव → वस्तु के विपरीत ज्ञान → रस्सी को साँप समझना।

* प्रमा की प्राप्ति का साधन - प्रमाण ⇒ सही ज्ञान प्राप्ति का साधन।

⇒ प्रमाण के 6 भेद हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि।

* प्रमेय - प्रमाणों के माध्यम से जिसे जानते हैं।

* प्रमाता - प्रमेय को जो जानता है। (ज्ञाता)

प्रमाणों के संदर्भ में भारतीय दर्शन-

Scanned by CamScanner